<u>अगस्त माह के कृषि कार्य</u>

किसान बहिनों व भाईयो, नमस्कार ! अगस्त माह जिसे आप श्रावण-भाद्रपद भी कहते है, बरसात की झडी लगा देता है तथा चारों तरफ हरियाली से भर देता है । खुशी के साथ-साथ मच्छरों से मलेरिया व डेंगू का प्रकोप तथा पशुओं में खुर-मुहीं रोग भी फैलने लगता है । फसलों में भी कीटों तथा बिमारियों का प्रकोप बढ़ जाता है। इसी माह भाई-बहिन के प्यार का पवित्र त्यौहार रक्षाबंधन तथा देश की आजादी का दिन १५ अगस्त भी आता है । हम आपके प्रश्नों पर आधारित अगस्त माह में होने वाले कृषि कार्य बताएगें । लेख में सभी नापतोल प्रति एकड हिसाव से है ।

<u>तीन जरूरी बातें</u> -

- **<u>कीट नियंत्रण</u>** (पूरी पैदावार का आधार) अगस्त माह में कीटों की संख्या में बहुत बढ़ोतरी हो जाती है तथा फसलों के पत्तों , रस, फूल व फलों को अपना भोजन बनाते हैं । इससे पैदावाद में काफी कमी हो जाती है । समय पर फसल लगाने तथा उपयुक्त कीटनाशकों के प्रयोग से नुकसान को कम किया जा सकता है ।
- **<u>रोग नियंत्रण</u>** (उपज की गुणवत्ता का आधार) - इसी माह में बहुत सी बीमारियां भी फैलती है जिससे उपज में कमी के साथ-साथ गुणवत्ता भी गिर जाती है । रोगरोधी किस्में, बीजोपचार तथा बीमारीनाशक दवाईयां का समय पर प्रयोग लाभदायक रहता है ।
- **<u>खरपतवार नियंत्रण</u>** (भरपूर फसल का आधार) - खेतों के बीच तथा मेढ़ों पर घास-फूस बिल्कुल न उगने दें, इससे बीमारियों तथा कीटों को संरक्षण मिलता है । बीमार पोधों को भी खेत से निकालकर नष्ट कर दें ताकिं बीमारी को फैलने से रोका जा सके ।

<u>धान</u> - धान के खेतों में पानी लगातार रहना चाहिए तथा सप्ताह में एक बार पानी बदल दें । पानी की कमी की स्थति में कम से कम खेते को गीला जरूर रखें । शेष बची यूरिया की मात्रा ३/४ बोरा देने से पहले खेत से पानी तथा खरपतवार निकाल दें तथा अगले दिन फिर २ इंच तक खेतों में पानी खडा कर दें । धान में फास्फोरस भी दो बार दिया जा सकता है दूसरी किस्त रोपाई के ७ दिन तक दे दें । यदि जिंक नहीं दिया हो तो ३ सप्ताह बाद धान की फसल पीली पड सकती है तथा पत्तों पर भूरे धब्बे आ जाते हैं । यदि लेव बनाते समय जिंक सल्फेट न डाला हो तो इसके लिए तीन छिडकाव (५ कि.ग्रा. जिंक सल्फेट + २५ कि.ग्रा. यूरिया को घोल १०० लीटर में) करें । पहला छिडकाव एक महीने बाद तथा फिर १५ दिन के अन्तर पर करें । धान में लगने वाले कीडों की रोकथाम के बारे में पिछले महिनों में बताया जा चुका है । बीमारियों में तना गलन पौधों के तनों को गला देते हैं , पौधे जमीन पर गिर पडते हैं तथा तना चीरने पर सफेद रूई जैसी फफूंद तथा काले रंग के पिण्ड पाये जाते हैं रोकथाम के लिए रोपाई से पहले खेतों तथा मेडों पर पडे पिण्डों तथा ठूंठों को जला दें । खेत में हर हफ्ते पानी बदल दें तथा रोगग्रस्त खेत का पानी स्वस्थ्य खेत में न जाने दें । फसल कटाई के बाद ठूंठों को जला दें । बदरा या ब्लास्टर रोग में पत्तियों पर आंख के धब्बे बनते हैं , तने पर गाठें चारों ओर से काली हो जाती हैं और पौधा गांठ से टूट जाता है । रोक्थाम के लिए, लक्षण नजर आने पर प्रति एकड २०० ग्राम कार्बेन्डाजिम या २०० मि.ली. हिनासान या १२० ग्राम बीम को २०० लीटर पानी के घोल में छिडकें ।

<u>गन्ना</u> - अगस्त में गन्ने को बांधें तांकि फसल गिरने से बचे तथा पौध संरक्षण पर पूरा ध्यान दें क्योंकि इस माह काफी कीट व बीमारी लगने का भय रहता है । अगोला बेधक, पायरिल्ला, गुरदासपुर गंडुआ तथा जडबेधक कीटों का पिछले महिनों में बताये तरीकों से रोथाम करें । रत्ता रोग फफूंद के कारण लगता है । पत्ते पीले पड जाते हैं, गन्ना पिचक जाता हैं तथा उस पर काले दाग पड जाते हैं तथा गन्ना बीच से लाल हो जाता है जिससे सफेद आडी पट्टियां दिखाई देती हैं तथा गन्ने से शराब की सी बू आती है । रोकथाम के लिए रोगी पौधों को निकाल कर जला दें । बीमारी वाली फसल जल्दी काट लें । बीमारी वाले खेत से मोढ़ी फसल न लें तथा 1 साल तक गन्न न बोयें । रोगरोधी किस्म सी.ओ.एस-७६७ लगायें । सोका रोग भी फफूंद के कारण होता है तथा इसमें पत्ते सूख जाते हैं , गन्ने हल्के व खोखले हो जाते हैं । रोकथाम के लिए बाजाई स्वस्थ्य पोरियों से करें तथा रोगी खेत में कम से कम तीन साल तक अलग फसल चक्र अपनाएं ।

<u>मक्का</u> - वर्षा का पानी मक्का के खेत में खडा नहीं रहना चाहिए । इसका निकास लगातार होते रहना चाहिए । खरपतवार खेत से बराबर निकालते रहें । देर से बुआई वाली फसल में पौधें घुटनों की ऊचाई पर आ गये होंगे वहां नत्रजन की दूसरी किस्त एक बोरा यूरिया लगाऐं । जहा अगस्त में मक्का की फसल में झंडे आने लग गये है वहां नत्रजन की तीसरी किस्त एक बोरा यूरिया पौधों के आसपास डालें । मक्का में लगने वाले कीटों का उपचार पिछले माह में बताया जा चुका है । बीमारियों में बीज गलन,

पीथियम तना गलन, जीवाणु तना गलन, पत्ता अंगमारी तथा डाऊनी मिल्डयु है । इन रोगों के सामूहिक रोकथाम के लिए जून माह में बताया जा चुका है । रोगी पौधों को खेत से निकाल कर नष्ट कर दें ।

<u>**बाजरा**</u> - फसल में १/४ बोरा यूरिया पौध छटाई पर दें तथा बांकी १/४ बोरा सिट्टे बनते समय पर दें
। बाजरें में फुटाव तथा फूल आने की स्थिति के समय खेत में नमी बनाएं रखें । भारी वर्षा होने पर फालतू पानी तुरंत निकाल दें । सफेद लट कीडे के प्रौढ़ भूण्डों की रोकथाम के लिए वृक्षों पर से गिराकर इकठ्ठा करके मिट्टी के तेल से जला दें । बालों वाली सुण्डियों को २५० मि.ली. मोनोक्रोटोफास ३६ एस एल या ५०० मि.ली. एण्डोसल्फान ३५ ईसी को २५० लीटर पानी में मिलाकर छिडके । भूण्ड की रोकथाम के लिए ४०० मि.ली. मैलाथियान ५० ईसी को २५० लीटर पानी में मिलाकर छिडकें । रोगग्रस्त पौधों का उखाडकर नष्ट कर दें ।

<u>**कपास**</u> - कपास में फूल आने के समय नत्रजन खाद की बाकी आधी मात्रा दे दें जोकि अमेरिकन कपास में २/३ बोरी, संकर कपास में १/२ बोरी होती है । खरपतवार भी निकालते रहें । नत्रजन खाद देने से पहले खेत में काफी नमी होनी चाहिए परंतु पानी खडा नहीं होना चाहिए । वर्षा के बाद फालतु जल का निकास तुरंत होना चाहिए । यदि फूल आने पर खेत में नमी नहीं होगी तो फूल और फल झड जाएगे तथा पैदावार कम हो जायेगी । एक तिहाई टिण्डे खुलने पर आखिरी सिंचाई कर दें । इसके बाद कोई सिंचाई न करें तथा खेत में वर्षा का पानी खडा न होने दें । देसी कपास में अगस्त माह के पहले पखवाडे में कपास से निकल रहे फूटों का काट दें, इससे पैदावार बड जाती है । फूल आने पर नेप्थलीन ऐसीटिक एसिड ५० सी सी का छिडकाव अगस्त के अंत या सितम्बर के शुरू में करें । छिडकाव में खारा पानी प्रयोग नहीं करें । इस छिडकाव से फूल व टिण्डे सडते नहीं व पैदावार ज्यादा मिलती है । अगस्त माह कपास की फसल पर हरा तेला , रोयेदार सुण्डी / कातरा , चित्तीदार सुण्डी, कुबडा कीडा तथा अन्य पत्ती खाने वाले कीडे का प्रकोप वढ़ जाता है । इन कीडों की तथा कपास की बीमारियों की रोकथाम जुलाई माह में बता चुके है फिर भी बीजोपचार ही सबसे उत्तम बिधि है । कपास के खेत के निकट भिण्डी न उगायें तथा आसपास पीली बूटी, कंघी बूटी व अन्य खरपतवारों को नष्ट कर दें । नीबू जाति के बागों के पास अमेरिकन कपास न बोयें ।

<u>**मूंग, उडद, लोबिया, अरहर, सोयाबीन**</u> - इस प्रकार की दलहनी फसलों में फूल आने पर मिट्टी में हल्की नमी बनाये रखें इससे फूल झडेगें नही तथा अधिक फलियां लगेगी व दाने भी मोटे तथा स्वस्थ्य होंगे परंतु खेतों में वर्षा का पानी खडा नहीं होना चाहिए तथा जलनिकास अच्छा होनो चाहिए । इन दलहनी फसलों में फलीछेदक कीडे का प्रकोप भी इसी महीने आता है इसके लिए जब ५० प्रतिशत फलियां आ जाएं तो ६०० मि.ली. एण्डोसल्फान ३५ ईसी या ३०० मि.ली. मोनोक्रटोफास ३६ एस एल को ३०० लीटर पानी में घोलकर छिडकें । जरूरत पडने पर १५ दिन बाद फिर छिडकाव कर सकते हैं ।

<u>**मूंगफली**</u> - यदि मूंगफली में फूल आने की अवस्था है तो सिंचाई अवश्य करें तथा दूसरी सिंचाई फल लगने पर जरूरी है इससे मूंगफली की सूइयां जमीन में आसानी से घुस जाती है । मूंगफली फसल बोने के ४० दिन बाद इनडोल ऐसिटिक एसिड ०.५ ग्राम को एल्कोहल (५ मि.ली.) में घोलें तथा १०० लीटर पानी में मिलाकर फसल पर छिडकें फिर 1 सप्ताह बाद ६ मि.ली. इथरल (४० प्रतिशत) १०० लीटर पानी में घोलकर छिडकने से मूंगफली की पैदावार १५ से २५ प्रतिशत तक बढ़ जाती है । मूंगफली तथा तिल में कीडों तथा बीमारियों की रोकथाम जुलाई माह में बता चुके हैं ।

<u>**चारा**</u> - किसान भाई जून-जुलाई में लगाई फसलों से कुछ चारा पशुओं के लिए प्राप्त कर सकते हैं ।

<u>**सब्जियां**</u> - *भिण्डी* - फूल आने के एक सप्ताह बाद फल उतार लें नहीं तो फल रेशेदार होने से कम कीमत मिलती है । खेत में नमी बनाये रखें तथा २० कि.ग्रा. यूरिया छिडके । कीडों में फलीछेदक को फूल आने से पहले ५०० मि.ली. मैलाथियान ५० ई सी का छिडकाव करें । इसके बाद ७ दिन तक फल न उतारें । रोगों की रोकथाम स्वथ्य बीजोपचार से ही करें । ***बैंगन*** व ***टमाटर*** - की पौध जुलाई अन्त में अगर नहीं लगाई तो अगस्त में रोपाई कर दें । विधि जुलाई माह में बता चुके है । अगस्त माह में खरपतवार नियंत्रण तथा खेत में उचित नमी बनाये रखें तथा फालतू पानी क निकास करते रहें । १/२ बोरा यूरिया रोपाई के ३ सप्ताह बाद दें । खीरा - तथा अन्य सब्जियों में फल छेदक कीडों का हमला होने का खतरा बना रहता है । किसान भाइयों को दवाईयों का छिडकाव समय-समय पर करते रहना चाहिए । परंतु दवाई छिडकने के एक सप्ताह बाद ही फल तोडे तथा पानी से सब्जी अच्छी तरह धोये । इस फसल में १/२ बोरा यूरिया छिटकें इससे फल अच्छे लगेगें । पत्तागोभी व फूलगोभी - इसकी अगेती फसल के लिए अगस्त में नर्सरी लगाएं । पत्तागोभी की गोल्डन एकड तथा पूसा मुक्ता व फूलगोभी की पूसा सिंथेटिक , पूसा सुभद्रा तथा पूसा हिमज्योति किस्में चुनें । २५० बीज को 1 ग्राम केप्टान से उपचारित कर 1 फुट चौडे व सुविधानुसार लम्बे व ऊचें नर्सरी शैया में लगाएं । बीच में अच्छी चौडी नालियां रखें । नर्सरी में सडी-गली खाद अच्छी मात्रा में मिला दें । नर्सरी में बीज लगाने के बाद उचित नमी बनाये रखें तथा धूप से भी बचाएं । पौध की रोपाई सितम्बर में करें । गाजर - मूली - इनकी

अगेती फसल के लिए अगस्त में बोआई करें । गाजर की पूसा केसर तथा पूसा मेघाली किस्मों का २-२.५ कि.ग्रा. बीज को १-१.५ फुट दूर लाइनों में आधा इंच गहरा लगाएं । मूली की पूसा देशी किस्म का ३-४ कि.ग्रा. बीज 1 फुट लाइनों में तथा ६ इंच दूरी पौधों में रखकर लगायें । बोने से पहले खेतों में आधा बोरा यूरिया 1 बोरा सिंगल सुपर फास्फेट तथा आधा बोरा म्यूरेट आफ पोटास डालें । मूली व गाजर में बहुत पानी की जरूरत पडती है तथा हर ४-५ दिन में फसलों को पानी चाहिए ।

<u>वागवानी</u> - नींबू व लीची में गुट्टी बाधने के लिए अगस्त उचित समय है । बरसात में बागों में जल निकास तथा खरपतवार नियंत्रण पर ज्यादा ध्यान दें तथा बीमारी फैलने की स्थिति में तुरंत उपचार करें । अगस्त माह के अंत तक पपीते की पौध भी गढ़ों में लगाई जा सकती है । इसके लिए गढढे, अच्छी मिट्टी व देशी खाद से उपर तक भर लें तथा दीमक से बचाव के लिए २० मि.ली. क्लोरपाइरीफास डालें । फूल - ग्रीष्म ऋतु के फलों का समय पूरा हो गया है तथा इन्हें धीरे-धीरे निकाल दें तथा क्यारियों को खुदाई कर दें । मिट्टी को रोगरहित बनाने के लिए दवाईयां डालें । सर्दियों के फूलों की बीजाई की तैयारी शुरू कर दें ।

<u>बानकी</u> - *जेट्रोफा (रतनजोत)* पोधे के बीज से बायोडीजल बनता है । बीज में ४० % तेल होता है जिसे डीजल में मिलाकर मोटर गाडी व डीजल पम्प में प्रयोग कर सकते हैं । जैट्रोफा नमी वाली भूमि तथा दिसम्बर-जनवरी माह को छोडकर किसी भी जगह किसी भी समय लगाया जा सकता है । पोधौं की आयु ४५-५० वर्ष होती है तथा पहले वर्ष में ही फसल दे देता है जिससे २५,००० रूपये प्रति एकड पैदावार मिलती है जोकि फसल की आयु के हिसाब से बढ़ती जाती है । पोधें को १२ **x 12** फुट की दूरी पर या मेढ़ों पर भी लगाया जा सकता है । इस पशु नहीं खाते है तथा शुष्क, बंजर, पथरीली भूमि में भी आसानी से लग जाता है । जैट्रोफा के खेत में हल्दी अदरक, चना, मटर, मसूर आदि की मिश्रित खेती भी हो सकती हैं । सफेदा, बबूल, शीशम तथा नीम - अगस्त में बंजर भूमि में लगा सकते है । इनकी लकडी ईधन, उद्योगों का कच्चा माल, बिजली के खम्बे, फर्निचर बनाने के काम आते है तथा काफी लाभदायक हैं । बबूल व नीम भेड-बकरियों का चारा भी है । सफेदा के पेड अगस्त में खेतों, नालियों और सडकों के किनारे १० फुट दूरी पर तथा सघन पौध रोपण में १० **x** १० फुट पर लगाएं । बबूल तथा शीशम को १५ **x** १५ फुट तथा नीम को २५ **x** २५ फुट पर लगायें । **1 x 1 x 1** फुट गढ़ बनाकर उपर की मिट्टी तथा गोबर की सडी-गली खाद बराबर मिलाकर भर दें । दीमक से बचाव के लिए २० मि.ली. क्लोरोपाइरीफास २० ई.सी. डालें । पेड लगाने के ३ माह बाद २० ग्राम यूरिया दूसरे साल ५० ग्राम तथा ३, ४, ५ तथा ६ साल १०० ग्राम यूरिया प्रति पेड पानी के साथ दें । नर्सरी में तैयार पौध जंगल विभाग , कृषि विभाग या कृषि विश्वविद्यालयों से समय पर संपर्क करके प्राप्त कर सकते हैं ।

किसान भाई अगस्त में होने वाली बांकी क्रियाओं के बारे में जानकारी हमसे सीधा फोन ०१२०-२५३५६२८ से भी अथवा ई-मेल **wsguleria@kribhco.net** से भी सम्पर्क कर सकते हैं । अगले माह फिर मिलेंगे । जय हिन्द !